In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding.

३.२६

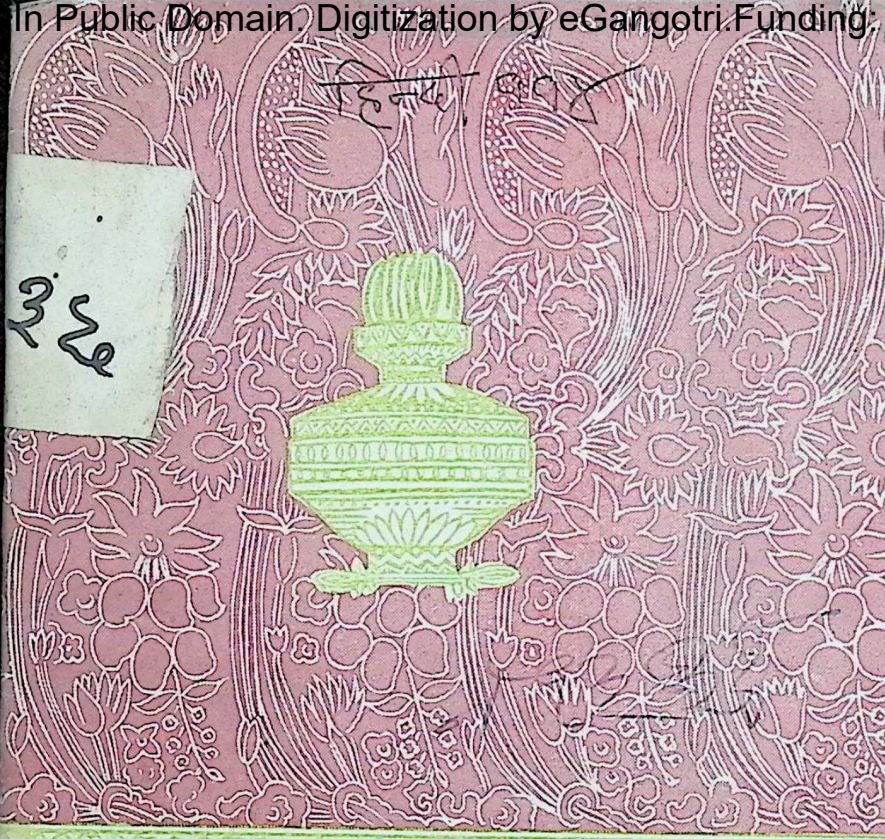

सामाजिक विकास माला

...ा मुईनुद्दीन चिश्ती

...साहित्य मण्डल प्रकाशन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

समाज-विकास-माला : ४४

ख्वाजा

मुईनुद्दीन चिश्ती

अजमेरशरीफ के संत की कहानी

लेखक

चंद्रगुप्त वार्ष्णेय

१९२३६

हि. १९४

संपादक

यशपाल जैन

पुस्तक भेंट के निमित्त है

१९५७

सस्ता साहित्य मंडल-प्रकाशन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding.

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल,
नई दिल्ली

दूसरी बार : १९५७
मूल्य
[redacted]४०न.प.

मुद्रक
हिंदी प्रिंटिंग प्रेस,
दिल्ली

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

समाज-विकास-माला

हमारे देश के सामने आज सबसे बड़ी समस्या करोड़ों आदमियों की शिक्षा की है। इस दिशा में सरकार की ओर से यदि कुछ कोशिश हो रही है तो वही काफी नहीं है। यह बड़ा काम सबकी सहायता के बिना पार नहीं पड़ सकेगा।

बालकों तथा प्रौढ़ों की पढ़ाई की तरफ जबसे ध्यान गया है, ऐसी किताबों की मांग बढ़ गई है, जो बहुत ही आसान हों, जिनके विषय रोचक हों, जिनकी भाषा मुहावरेदार और बोलचाल की हो और जो मोटे टाइप में बढ़िया छपी हों।

यह पुस्तक-माला इन्हीं बातों को सामने रखकर निकाली गई है। इसमें कई पुस्तकें निकल चुकी हैं। इन सबकी भाषा बड़ी आसान है। विषयों का चुनाव बड़ी सावधानी से किया गया है। छपाई-सफाई के बारे में भी विशेष ध्यान रखा गया है। हर किताब में चित्र भी देने की कोशिश की है।

यदि पुस्तकों की भाषा, शैली, विषय और छपाई में किसी सुधार की गुंजाइश मालूम हो तो उसकी सूचना निस्संकोच देने की कृपा करें।

दूसरा संस्करण

बड़े हर्ष की बात है कि इस पुस्तक का दूसरा संस्करण इतनी जल्दी प्रकाशित हो रहा है। इस माला की सभी पुस्तकें पाठकों को पसंद आ रही हैं, इससे हमें बड़ा आनंद होता है। हमें विश्वास है कि इन सामयिक और उपयोगी पुस्तकों को पाठक चाव से पढ़ेंगे और इनके प्रचार में हाथ बटायंगे।

—मंत्री

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding.

पाठकों से

इस माला में आप कई संतों की जीवनी और उनके उपदेश पढ़ चुके हैं। इस पुस्तक में आप एक और ऊंचे संत का हाल पढ़िए। ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती मुसलमान-घर में पैदा हुए थे; लेकिन संत किसी एक बिरादरी या धर्म के नहीं होते। वे सबके होते हैं। यही कारण है कि ख्वाजासाहब को सब मानते हैं और उनकी दरगाह शरीफ़ पर हिंदू भी बड़ी भक्ति-भावना से जाते हैं।

ख्वाजासाहब की जीवनी और उनके उपदेश सब के फायदे के हैं। आप ध्यान से पढ़ेंगे तो आपको लगेगा कि जैसे आपने बहुत-कुछ पा लिया, एक अच्छा रास्ता आपके सामने खुल गया।

—संपादक

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती

: १ :

अजमेर में हज़रत ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह है। यह दूर-दूर तक मशहूर है। इसमें ख्वाजा-साहब का मजार[1] है।

हर साल रजब[2] के महीने में यहां पहली तारीख से छः तारीख तक बड़ा भारी मेला लगता है। यह ख्वाजा-साहब का उर्स[3] कहलाता है। उर्स में हमारे देश के अलावा पाकिस्तान तथा दूसरे मुल्कों के भी यात्री आते हैं। यात्रियों की संख्या लाख-डेढ़लाख तक पहुंच जाती है।

यात्री लोग दरगाह में और मजार पर चढ़ावा चढ़ाते हैं। कोई धन देता है, कोई फूल, शीरनी या चादर चढ़ाता है। मुसलमान लोग मज़ार के पास फ़ातिहा[4] पढ़ते हैं और दुआएं मांगते हैं। बहुत-से हिंदू

---

१. कब्र।

२. रजब इस्लामी साल का सातवां महीना है। इस्लामी पंचांग चंद्रमा के हिसाब से चलता है। इसलिए हर साल इस्लामी महीना १० दिन पीछे सरक जाता है।

३. मौत के दिन श्राद्ध की तरह मनाया जानेवाला उत्सव।

४. कुरान में दी हुई खुदा की प्रार्थना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding.

भी मजार के दर्शन करते हैं और चढ़ावा चढ़ाते हैं।

लोगों का मानना है कि ख्वाजासाहब की कृपा से दुख दूर होते हैं, इच्छाएं पूरी होती हैं। इस तरह की बहुत-सी घटनाएं बताई जाती हैं। एक घटना तो इतिहास में भी मशहूर है। अकबर बादशाह के बहुत दिनों तक कोई लड़का नहीं हुआ। उसने ख्वाजासाहब की मनौती की। संकल्प किया कि अगर मेरे बेटा हुआ तो दरगाह की ज़ियारत[1] के लिए अजमेर का पैदल सफर करूंगा। इसके बाद शाहजादा सलीम पैदा हुआ। अपने इरादे के अनुसार अकबर आगरे से अजमेर तक पैदल आया। यहां आकर उसने ख्वाजासाहब के मजार पर पूजा की, गरीबों को खाना खिलाया और दरगाह में एक मस्जिद बनाने का हुक्म दिया।

शाहजादा सलीम बाद में बादशाह जहांगीर हुआ। यह भी ख्वाजासाहब का भक्त था। गद्दी पर बैठने के बाद इसने अजमेर आकर दरगाह की ज़ियारत की। गरीबों को दान दिया और खाना खिलाया। ख्वाजा-साहब का हल्क़ा-बगोश ग़ुलाम[2] बनने के लिए कान छिदवाये।

---

१. तीर्थ के दर्शन।

२. कनछिदा गुलाम—पुराने जमाने में जिन्हें गुलाम बनाया जाता था, उनके कान छेद दिये जाते थे।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

अकबर और जहांगीर के अलावा कई सुल्तान और बादशाह ख्वाजासाहब के भक्त हुए हैं। इनमें शहाबुद्दीन गौरी, शम्सुद्दीन इल्तुतमश, महमूद खिलजी, शेरशाह सूरी, शाहजहां और औरंगजेब के नाम हम सब जानते हैं। औरंगजेब क़ब्रों की पूजा में यकीन नहीं करता था। जब वह ख्वाजासाहब की दरगाह में गया तो उसने कहा, "मैं ख्वाजासाहब की खिदमत में सलाम पेश करूंगा। अगर जवाब न मिला तो दरगाह को तुड़वा डालूंगा।" कहते हैं कि जब उसने सलाम पेश किया तो मजार में से आवाज आई—"वले-कुम अस्सलाम आलमगीर हुज्जती।" इसपर औरंगजेब को ख्वाजासाहब का चमत्कार स्वीकार करना पड़ा।

ख्वाजासाहब के पास न राजपाट था, न धन-दौलत। वह पहुंचे हुए फकीर, योगी और भक्त थे। सदा तीन-दुखियों की सेवा और सहायता करते थे। उनका कहना था—दीनों की फरियाद सुनना, हाजत-मंदों की हाजत पूरी करना, भूखों को खाना खिलाना, इनसे बढ़कर और कोई नेक काम नहीं है। उन्होंने अपनी जिंदगीभर नेक काम किये। जो कोई उनके पास आता, खाली हाथ न लौटता।

जन्म से ही इनका ऐसा दयालु स्वभाव था। जब

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

यह दूध-पीते बच्चे थे, उस समय की बात है। कोई स्त्री इनकी माता से मिलने आती और उसका बच्चा दूध के लिए रोता, तो यह इशारों से अपनी माता से कहते—मेरा दूध इस बच्चे को पिला दो। इनकी माता उसे दूध पिलाती तो खूब हँसते और खुश होते।

जब यह तीन-चार साल के थे तब अपने बराबर के बच्चों को घर पर बुला लाते। उन्हें खाना खिलाते। एक बार ईद पर यह अच्छे कपड़े पहनकर ईदगाह जा रहे थे। रास्ते में एक अंधा बालक मिला। उसके कपड़े फटे हुए थे। इन्होंने अपने कपड़े उतारकर उसे पहना दिये और उसे अपने साथ ईदगाह ले गये।

फकीर होने के बाद बहुत-से दीन और दुखी लोग इनके पास आने लगे। यह उनकी सहायता करते। उनका दुख दूर करते। किसीको रुपए की जरूरत होती तो अपने मुसल्ले[1] के नीचे से कुछ निकालकर उसे दे देते।

इन्हीं गुणों के कारण ख्वाजासाहब का नाम चारों तरफ फैला। लोग इन्हें नायब रसूल, अता-ए-रसूल, ख्वाजा बुजुर्ग, गरीब नवाज, सुल्तान-उल-हिंद आदि

१. नमाज पढ़ने की छोटी दरी।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

कहने लगे। ख्वाजासाहब के बाद इनकी दरगाह एक तीर्थस्थान बन गई। कहते हैं, हजरत मोहम्मद की तरफ से इन्हें एक बड़ा खिताब मिला था। एक बार यह अपने गुरू के साथ मदीना गये। गुरू के हुक्म से इन्होंने वहां हजरत मोहम्मद के मजार को सलाम पेश किया। भीतर से आवाज आई—वलेकुम अस्सलाम, या कुत्ब-उल-मशायख बर्रो बहर।[1]

: २ :

ख्वाजा मुईनुद्दीन का जन्म ५३० हिजरी[2] (११३६ ई०) में हुआ था। इनके पिता ख्वाजा-गयासुद्दीन ईरान में संजर के रहने वाले थे। बाद में वह इस्फहान चले गये। यहीं ख्वाजा-साहब का जन्म हुआ। ख्वाजा गयासुद्दीन हजरत अली के पुत्र हजरत इमाम हुंसैन के वंश में से थे। ख्वाजासाहब की माता हजरतअली के दूसरे पुत्र हजरत इमाद हसन के वंश की थीं। हजरत अली हजरत मोहम्मद के धेवते थे। इस तरह पिता और माता दोनों की ही तरह से ख्वाजा मुईनुद्दीन हजरत

१. ऐ धरती और पानी के शेखों के सरदार, तेरा सलाम मंजूर है।
२. मुसलमानों का संवत्, जो हजरत मोहम्मद के मदीना जाने के साल से शुरू हुआ है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding.

मोहम्मद के वंश के थे।

ख्वाजासाहब बचपन में खोरासान में रहे। यहीं घर पर इनकी शुरू की पढ़ाई हुई। नौ साल की उम्र में इन्होंने सारी कुरान शरीफ[1] याद कर ली। फिर इनके पिता ने इन्हें संजर के मदरसे में भर्ती करा दिया। यहां थोड़े ही समय में इन्होंने आगे की बहुत-कुछ पढ़ाई कर डाली।

जब इनकी उम्र पंद्रह साल की थी, इनके पिता गुजर गये। पिता की जायदाद में से एक बाग और एक पनचक्की इनके हिस्से में आये। उन्हींकी आमदनी पर यह गुजारा करने लगे।

बचपन से ही वह फकीरों और दरवेशों का आदर-सत्कार किया करते थे। पिता की मौत के बाद एक दिन वह बाग में पानी दे रहे थे। संयोग से महात्मा इब्राहीम क़दोज़ी का उधर आना हुआ। ख्वाजासाहब ने इनका बड़ा सत्कार किया। महात्मा क़दोज़ी ने खल का एक टुकड़ा अपनी बगल से निकालकर इन्हें दिया। इसे खाते ही ख्वाजासाहब को दुनिया से वैराग्य होगया। बाग और पनचक्की बेचकर रुपया गरीबों व फकीरों को बांट दिया। फिर

१. मुसलमानों की धर्म-पुस्तक।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

घर छोड़कर खुदा की तलाश में निकल पड़े।

उस समय समरकंद और बोखारा इस्लामी-विद्या के केंद्र थे। ख्वाजासाहब पांच साल तक इन शहरों में रहे। यहां इन्होंने धर्म की किताबें पढ़ीं। फिर बगदाद होते हुए हारून पहुंचे। इस समय इनकी उम्र बीस साल की थी। हारून में इनकी भेंट ख्वाजा उस्मान हारूनी चिश्ती से हुई। वह बहुत ऊंचे फक़ीर थे। ख्वाजासाहब ने उन्हें अपना गुरू बनाया और उनसे दीक्षा ली। ढाई साल गुरू की सेवा में रहे। इसके बाद घूमते-फिरते मुल्तान होकर लाहौर आये। वहां दो सप्ताह ठहरे। यह ११६६ ई० की बात है। जिस हुजरे[1] में ख्वाजासाहब ठहरे थे, वह लाहौर में अब-तक मौजूद है।

लाहौर से ग़जनी और फिर बलख़ होते हुए वापस बगदाद लौट गये। वहां अपने गुरू ख्वाजा उस्मानी से दुबारा दीक्षा ली। इस बार गुरू की कृपा से इन्हें सिद्धि हासिल हुई। इस घटना का हाल ख्वाजासाहब ने खुद लिखा है। उसका सार यह है:

बग़दाद की मसजिद में मुईनुद्दीन हसन संजरी[2] ने

---

१. मस्जिद में प्रार्थना करने की कोठरी।

२. ख्वाजासाहब का असली नाम।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding.

हजरत ख्वाजा उस्मान हारूनी को सलाम पेश किया। गुरू ने नमाज अदा करवाई और कुरान की आयतें पढ़वाईं। फिर हाथ पकड़कर आसमान की तरफ किया और कहा--तुझे खुदा तक पहुंचा दूं। फिर मेरे बाल कैंची से काट दिये और चौकोशी टोपी सिर पर रख दी; अपनी दरी पर बैठाया और रातभर इबादत करने को कहा। दूसरे दिन आसमान और पाताल के नज्जारे दिखाये। अपनी दो उंगलियों में हजारों दुनियां दिखाईं। फिर सामने पड़ी हुई एक ईंट उठाने को कहा। मैंने उठाई तो मुट्ठीभर दीनार[1] मिलीं। कहा—इन्हें फकीरों को बांट दे। मैंने बांट दीं। फिर बोले--कुछ दिन हमारे साथ रह। मैंने कहा--आपका जैसा हुक्म होगा, करूंगा।

इसके बाद ख्वाजासाहब ने अपने गुरू के साथ काबे[2] की यात्रा की। इस यात्रा का वर्णन उन्होंने इस प्रकार किया है--गुरू ने यहां भी मेरा हाथ पकड़ा और खुदा के सुपुर्द किया। फिर मेरे लिए दुआ की। काबे में से आवाज आई--हमने मुईनुद्दीन को क़बूल किया।

---

१. ईरान का सोने का सिक्का।

२. मक्का में मुसलमानों का सबसे पवित्र धर्म-स्थान। मुसलमान लोग यहां 'हज' के लिए जाते हैं।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

मक्का से गुरू के साथ मदीना गये। यहां की घटना का वर्णन पहले किया जा चुका है। इस घटना के बाद हज़रत उस्मानी ने ख्वाजासाहब से कहा--अब तू दरजे कमाल को पहुंच गया।

मदीना से वापस आकर ख्वाजासाहब बीस साल तक गुरू के साथ रहे। उनके साथ जगह-जगह घूमे। फकीरों और दरवेशों का सत्संग किया। इनका नाम सब जगह फैल गया। जब हज़रत उस्मानी ने देखा कि ख्वाजासाहब सब तरह से काबिल हैं तो इन्हें खिलाफ़त[1] देकर अपना वारिस बनाया। इनको अपना सज्जादा-नशीन[2] और जानशीन[3] घोषित किया। अपना सोटा, मुसल्ला, गुदड़ी, जूतों का जोड़ा और चांदी मढ़ा चोब इन्हें देकर कहा--ये चीजें रसूल-खुदा[4] से हमतक पहुंची हैं। जिसको मर्द पाना, उसे हमारी ये यादगारें देना।

फिर हज़रत उस्मानी ने ख्वाजासाहब को उपदेश दिया--दुनिया से कोई कामना न करना। आबादी से दूर रहना। किसीसे कुछ भी तलब न करना।

यह उपदेश देकर हज़रत उस्मानी ने ख्वाजासाहब

---

१. खलीफा की जगह।
२. गद्दी पर बैठने का अधिकारी।
३. स्थान पर बैठने का अधिकारी।
४. हज़रत मोहम्मद।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

को गले लगाया। उनके सर और आंखों को चूमा। कहा—तुझे खुदा के सुपुर्द किया। इसके बाद ख्वाजा-साहब ने अपने गुरू से विदा ली। उस समय इनकी उम्र ५२ साल की थी।

मुसलमानों में चिश्तिया संप्रदाय का सिलसिला ख्वाजा उस्मान चिश्ती से शुरू हुआ माना जाता है। ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती ने इनकी शिष्य-परंपरा को चलाया। यह शिष्य-परंपरा आज तक चली आ रही है। ख्वाजासाहब की दरगाह के दीवान इसी परंपरा से होते आये हैं। ये ख्वाजासाहब के सज्जादा-नशीन कहलाते हैं। कहते हैं, ख्वाजासाहब को वरदान मिला था कि उनकी शिष्य-परंपरा क़यामत तक कायम रहेगी।

: ३ :

गुरू से विदा होकर ख्वाजासाहब देश-विदेश की यात्रा पर निकल पड़े। जहां जाते, वहां बस्ती से दूर कब्रिस्तान में ठहरते। दीन-दुखियों की सहायता करते। जब नाम फैलने लगता तो चुपचाप वहां से चल देते। इस तरह घूमते-फिरते इस्फहान पहुंचे। वहां ख्वाजा कुत्बुद्दीन बख्त्यार काकी इनके चेले बन गये। ख्वाजा कुत्बुद्दीन की उम्र इस समय सिर्फ चौदह

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

साल की थी, परंतु इतनी छोटी उम्र में ही फकीरी के ऊंचे दर्जे को पहुंच गये थे। यह ख्वाजासाहब की सेवा के लिए उनके साथ हो गये।

इस्फ़हान से ख्वाजासाहब हज के लिए मक्का गये। मक्का से मदीना की यात्रा की। कहते हैं, वहां इन्हें अजमेर जाने की प्रेरणा मिली। ख्वाजासाहब यह भी नहीं जानते थे कि अजमेर किधर है। यह हैरान हुए तो सपने में अजमेर का रास्ता दिखाई दिया।

मदीना में ही ख्वाजासाहब ने ख्वाजा कुत्बुद्दीन काकी को खिलाफत और दरवेश की गुदड़ी दी। ख्वाजा काकी उस समय सत्रह साल के थे। यह ख्वाजासाहब के सबसे बड़े शिष्य हुए। इनका मजार दिल्ली के पास महरौली में है। इनकी दरगाह पर भी हर साल बड़ा भारी उर्स मनाया जाता है।

मदीना से ख्वाजासाहब ख्वाजा कुत्बुद्दीन को साथ लेकर हिंदुस्तान के लिए रवाना हुए। रास्ते में हिरात का हाकिम इनका चेला हो गया।

सन् ११९१ ई० में ख्वाजासाहब मुल्तान, लाहौर और दिल्ली होते हुए अजमेर आये। उस समय अजमेर नगर तारागढ़ के नीचे घाटी में बसा हुआ था। ख्वाजा-साहब घाटी की दूसरी ओर उस स्थान पर ठहरे, जो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding.

आजकल इंदरकोट कहलाता है। यहां उन्होंने छाया-दार पेड़ों के नीचे अपना डेरा डाला। अजमेर में उन दिनों पृथ्वीराज चौहान राज करता था। यह कईबार शहाबुद्दीन गोरी को हराकर भगा चुका था। 'पृथ्वीराज-रासो' में लिखा है कि जब ख्वाजासाहब अजमेर आये तो यहां भूकंप हुआ। पृथ्वीराज ने इनपर गोरी के जासूस होने का संदेह किया। इसलिए इन्हें राजकोट में ठहरने की आज्ञा नहीं दी। यहां से हटकर यह आनासागर के किनारे ठहरे। उस पहाड़ी पर ख्वाजासाहब का चिल्ला[1] अभी तक मौजूद है। कुछ दिन बाद ख्वाजा-साहब उस स्थान पर आ गये, जहां आजकल इनकी दरगाह है। परंतु पृथ्वीराज ने इनके अजमेर में रहने पर ही आपत्ति की। इसलिए वह अजमेर छोड़कर चले गये। अजमेर में यह कोई सालभर रहे।

अजमेर से लौटकर ख्वाजासाहब ग़ज़नी पहुंचे। उन दिनों वहां शहाबुद्दीन गोरी पृथ्वीराज से बदला लेने की तैयारियां कर रहा था। वह अपना लश्कर लेकर ग़ज़नी से रवाना हुआ। ख्वाजासाहब पेशावर तक उसके साथ आये। वहां से लाहौर चले गये। जब गोरी ने दिल्ली जीत ली तो ख्वाजासाहब दिल्ली आ

१. चालीस दिन ठहरने का स्थान।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

गये। फिर ख्वाजा कुत्बुद्दीन काकी को दिल्ली में छोड़कर अजमेर गये। इनके अजमेर आने के बाद गोरी और पृथ्वीराज के बीच तरावड़ी के मैदान में लड़ाई हुई। इस लड़ाई में पृथ्वीराज मारा गया। गोरी ने अजमेर पर चढ़ाई करके उसे भी जीत लिया। सन् ११९३ ई० में अजमेर पर गोरी का अधिकार हो गया।

इस बार ख्वाजासाहब लगभग आठ साल अजमेर में ठहरे। इनका नाम दूर-दूर तक फैल गया। बहुत-से लोग इनके दर्शन के लिए आने लगे।

सन् १२०० ई० में ख्वाजासाहब फिर बग़दाद चले गये। कुछ दिन बाद बलख़ पहुंचे। वहां मौलाना ज़ियाउद्दीन रहते थे। वह बड़े विद्वान थे, परंतु खुदा में उनकी लगन थी। ख्वाजासाहब का उपदेश सुनकर यह उनके चेले बन गये।

छः बरस बाद ख्वाजासाहब अजमेर लौट आये और यहीं रहकर लोगों को इस्लाम का उपदेश देने लगे। बीच-बीच में ख्वाजा कुत्बुद्दीन से मिलने दिल्ली जाते रहते थे। इन्हीं दिनों इनके गुरू ख्वाजा उस्मान हारूनी इनसे मिलने दिल्ली आये। बोले, 'कुछ दिन हमारे साथ रहो, फिर अजमेर में बसना।" ख्वाजासाहब दिल्ली में ही ठहर गये। ख्वाजा उस्मानी के चले

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding.

जाने के बाद सुल्तान इल्तुतमश को शिक्षा देने लगे। इल्तुतमश के लिए इन्होंने 'गंज असरार'[1] नामक ग्रंथ लिखा। यह अध्यात्म का बड़ा उपयोगी ग्रंथ है।

दिल्ली में एक दिन ख्वाजासाहब ने ख्वाजा कुत्बुद्दीन के सब चेलों को बुलाकर आशीर्वाद दिया। फिर पूछा—"कोई रह तो नहीं गया है?" ख्वाजा कुत्बु ने कहा—"बाबा फ़रीदुद्दीन गंजशकर रह गया है। वह चिल्ले में बैठा है।" ख्वाजासाहब ने कहा—"चलो, उसे देखें।" दोनों बुजुर्ग बाबा फ़रीद के हुजरे पर पहुंचे और दरवाजा खोला। बाबा फ़रीद बहुत बूढ़े और कमजोर थे। आवभगत के लिए खड़े न हो सके। इसलिए आंखों में आंसू भरकर सिर जमीन पर टेक दिया। इसपर दोनों बुजुर्गों ने उनका एक-एक हाथ पकड़कर उठाया। फिर ख्वाजासाहब ने खुदा से आरजू की—"खुदाया, हमारे फ़रीद को कबूल फरमा और दरवेशों के दरजे पर पहुंचा।" कहते हैं कि यह प्रार्थना स्वीकार हुई। फिर ख्वाजा कुत्ब ने बाबा फ़रीद को चिश्ती-शिष्य-परंपरा में शामिल किया। उनके पगड़ी बांधी और खिलाफत की दूसरी चीजें उन्हें दीं। ख्वाजासाहब ने ख्वाजा

१. रहस्य-कोश।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

कुत्ब से कहा—"कुत्ब, बड़े शहबाज[1] को फंदे में लाये। इसका आस्ताना[2] सबसे ऊंचे दर्जे की जगह होगी !"

दिल्ली में हजरत निजामुद्दीन औलिया की दरगाह बहुत प्रसिद्ध है। यहां हर साल बड़ी धूमधास से उसे मनाया जाता है। हजरत निजामुद्दीन बाबा फरीद के ही शिष्य थे। बाबा फरीद अपनी गद्दी इन्हींको सौंप गये थे।

बाबा फरीद एक बार ख्वाजासाहब से मिलने अजमेर भी गये थे। दरगाह में इनके नाम का चिल्ला अभी तक मौजूद है।

सन् १२२३ ई० में ख्वाजासाहब अजमेर चले गये। अजमेर को उन्होंने अपना स्थायी निवास-स्थान बना लिया। कोई भी मुस्लिम या गैर-मुस्लिम इनके पास आता, उसके साथ प्रेम और आदर का वर्ताव करते। सबको फायदा पहुंचाते। सबकी सहायता करते। एक बार एक किसान आया। उसने आरजू की कि जमीन का इस्तमरारी[3] पट्टा उसे दिलवा दिया जाय। ख्वाजासाहब उस किसान को स्वयं इल्तुतमश के पास दिल्ली ले गये। ऐसे छोटे-से काम के लिए

---

१. बड़ा बाज, एक शिकारी पक्षी।

२. फकीरों के रहने की जगह।

३. सदा के लिए जमीन पर अधिकार।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

दिल्ली आने पर ख्वाजा काकी को अचरज हुआ। उन्होंने कहा--"यह काम तो आपका कोई खादिम ही कर सकता था। इसके लिए आपकी तकलीफ करने की क्या जरूरत थी?" ख्वाजासाहब ने जवाब दिया, "यह बहुत दुखी था। मैंने नबी के दरबार में मिन्नत की तो जवाब मिला--रंजोगम में शरीक होना ऐन बंदगी है। इस बंदगी के लिए मैं यहां आया हूं।" इस यात्रा में ख्वाजासाहब का बड़ा बेटा ख्वाजा फखरुद्दीन भी उनके साथ गया था। सुल्तान इल्तुतमश ने इसे मांडल गांव का माफी पट्टा दिया।

ख्वाजासाहब के आस्ताने पर रोज खाना पकता था। सैकड़ों दरवेश और दीन-दुखी लोग खाना खाते थे। कहते हैं, इस लंगर के लिए रोज जितने खर्च की जरूरत होती थी, उतना मुसल्ले के नीचे से निकालकर दे देते थे। ख्वाजासाहब की दरगाह में यह लंगर आज तक चालू है। लंगरखाने में रोज जौ का नमकीन दलिया बनता है। यह भूखों और गरीबों को बांटा जाता है। उर्स पर तो लंगरखाने में हजारों की भीड़ लग जाती है।

ख्वाजासाहब गरीबों, विधवाओं और बूढ़ों को भी सहायता देते थे। विद्वानों, विद्यार्थियों आदि को

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

वजीफे दिया करते थे।

: ४ :

ख्वाजासाहब का पहला विवाह ४२ बरस की उम्र में बीवी अमतुल्ला के साथ अजमेर में हुआ था। इस बीवी से उनके तीन संतानें हुईं। दो लड़के—ख्वाजा फखरुद्दीन तथा ख्वाजा हिसामुद्दीन और एक बेटी—बीवी हाफिज जमाल। ख्वाजा फखरुद्दीन मांडल में बसे। इनकी मृत्यु ६६१ हिजरी (१२६२ ई०) में हुई। इनका मजार अजमेर के पास सरवाड़ में है। यहां इनका सालाना उर्स होता है। ख्वाजा हिसामुद्दीन का मजार दरगाह में है। बीवी हाफ़िज जमाल का विवाह शेख रजीउद्दीन नागोरी के साथ हुआ। मृत्यु के बाद इनका शरीर ख्वाजासाहब के मज़ार के पास ही दफनाया गया। इनके नाम का एक चिल्ला तारागढ़ के नीचे चश्मे की घाटी में है। यहां हर साल मेला भरता है, जो 'नाल[1] का मेला' कहलाता है।

ख्वाजासाहब का दूसरा विवाह बुढ़ापे में बीवी अस्मतुल्ला के साथ हुआ। यह अजमेर के दारोगा सैयद वजहुद्दीन मशहदी की लड़की थी। इनके पेट से एक लड़का आ। ख्वाजा जियाउद्दीन अबूसईद। इनका

१. राजस्थानी भाषा में नाल 'घाटी' को कहते हैं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

मजार भी दरगाह में है।

अजमेर में ख्वाजासाहब के वंश के लोग अब भी हैं। ये अपने नामों के पीछे चिश्ती लिखते हैं। ये ख्वाजासाहब के मजार की खिदमत करते हैं, इसलिए खादिम कहलाते हैं।

सन् १२२९ ई० की बात है। ख्वाजा कुत्बुद्दीन अपने गुरू ख्वाजासाहब से मिलने अजमेर गये। ख्वाजा-साहब ने उनसे कहा—"मुझे यहां इसलिए भेजा गया कि मेरा मदफन[1] यहां हो। अब मेरे आखिरी सफर के कुछ ही रोज बाकी हैं।"

फिर ख्वाजाअली संजरी से लिखवाया—खिलाफ़त कुत्बुद्दीन बख्त्यार काकी को दी। दिल्ली इसका मुकाम है।

यह फ़रमान तैयार होगया तो ख्वाजा काकी को अपने पास बुलाया। कुलाह[2] सहित दस्तार[3] उनके सर पर रक्खा। अपनी गुदड़ी उन्हें उढ़ाई। हजरत उस्मान हारूनी का सोटा दिया। मुसल्ला और जूतों का जोड़ा दिया। कहा—यह अमानत रसूल अल्लाह की है। हमारे ख्वाजगान[4] को मिलती आई है। इसका हक बजाते

१. कब्र।
२. पगड़ी के नीचे पहनी जानेवाली टोपी।
३. पगड़ी।
४. चिश्ती-सम्प्रदाय के एक बाद दूसरे प्रधान ख्वाजाओं का सिलसिला।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

रहना। फिर कहा—मैंने तुझे हक़ताला के सुपुर्द किया।

यह कहकर ख्वाजा काकी को बिदा किया। वह दिल्ली चले गये। इसके बीस दिन बाद ख्वाजासाहब का स्वर्गवास हो गया। कहते हैं, तारीख ६ रजब ६२७ हिजरी (१२ मई १२३६ ई०) को शाम को ख्वाजासाहब हुजरे में चले गये। भीतर से दरवाजा बंद कर लिया। खादिमों[1] को अंदर आने की मनाही कर दी। रातभर हुजरे में से भजन की आवाज आती रही। सुबह आवाज बंद हो गई और ख्वाजासाहब नमाज के लिए नहीं निकले तो हुजरे का दरवाजा तोड़ा गया। देखा, ख्वाजासाहब की बेजान देह वहां थी। उनकी इच्छा के अनुसार उनका शव अजमेर में ही दफनाया गया।

अनोखी बात यह है कि गृहस्थ होते हुए भी ख्वाजा-साहब फ़कीरी के इतने ऊंचे दर्जे पर पहुंचे। दुनिया में रहते हुए भी दुनिया से अलग रहे।

मृत्यु के समय ख्वाजासाहब की उम्र ९७ वर्ष की थी।

ऐसा भी खयाल किया जाता है कि ख्वाजा-साहब रजब की पहली तारीख को ही हुजरे में बंद

१. ख्वाजासाहब के चाकर।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

हो गये थे। ६ तारीख को हुजरा खोला गया तब उनकी बेजान देह पाई गई। इसलिए उनका उर्स पहली से छः तारीख तक मनाया जाता है, क्योंकि यह तय नहीं है कि उनकी मौत की ठीक तारीख कौन-सी है।

: ५ :

ख्वाजासाहब के व्यक्तित्व में ध्यानयोग और कर्मयोग का अद्‌भुत मेल हुआ था। उनकी लौ हर समय खुदा में लगी रहती थी। खुदा का नाम हर वक्त उनकी जबान पर रहता था; परंतु ध्यान उनका सदा दीन-दुखियों पर रहता था। अपने सुख के लिए कभी कोई इच्छा नहीं करते थे, बल्कि कहते थे—"खुदाबंदा, जहां-कहीं दर्द हो, अपने मुईनुद्दीन को दे दे।"

निर्धनों और जरूरत-मंदों को खुले हाथ से दान देते थे, परंतु अपने ऊपर कुछ भी खर्च नहीं करते थे। गुदड़ी ओढ़ते-बिछाते थे। पहनने का कपड़ा फट जाता तो उसमें पैबंद लगा लेते थे।

ख्वाजासाहब को भजन सुनने का बहुत शौक था। उनकी महफिल कभी भजनों के बिना नहीं होती थी। भजन सुनते-सुनते रस में डूब जाते थे। इस्लाम में गाना-बजाना कट्टर धर्मशास्त्र के खिलाफ समझा जाता है। परंतु ख्वाजासाहब की मजलिसों का किसीने विरोध

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

नहीं किया। आज भी कव्वालों की महफिलें ख्वाजा-साहब के उर्स का एक महत्वपूर्ण अंग मानी जाती हैं।

शुरू में ख्वाजासाहब फारसी में ही बोला करते थे। बाद में मारवाड़ी मिली-जुली भाषा बोलने और समझने लगे। उर्दू भाषा यहीं से पनपी और आगे बढ़ी।

ख्वाजासाहब के चमत्कारों की अनेक घटनाएं प्रसिद्ध हैं। अपने जीवन में उन्होंने कितने ही चमत्कार किये। भक्तों के लिए उनका मजार भी चमत्कारी प्रभाव रखता है। इन चमत्कारों पर कोई विश्वास करे या न करे, परंतु ख्वाजासाहब का एक चमत्कार तो सबके सामने है। वह इस देश के निवासी नहीं थे। उनके पास कोई राजशक्ति नहीं थी। धन-दौलत भी नहीं थी। फिर भी उनका नाम आजतक लोग याद करते हैं। उनकी पूजा करते हैं। उनकी भक्ति करते हैं। उनके नाम की मनौती मनाते हैं। इस चमत्कार का कारण यह है कि वह सबसे प्रेम करते थे। दूसरों की सेवा उनका व्रत था। खुदा की सच्ची बंदगी वह इसीको समझते थे। उनका कहना था—जो इंसान खुदा के बंदों की खिदमत करता है, उसे खुदा जरूर मिलता है।

बहुत लोग पूजा-पाठ, प्रार्थना, उपवास आदि में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

फंसे रहते हैं। समझते हैं कि यही सबकुछ है, परंतु ख्वाजासाहब सत्य के पुजारी थे। ख्वाजा कुत्ब को एक पत्र में उन्होंने लिखा था--कलमा, नमाज, रोजा वगैरह की असली शक्ल पर गौर न करके महज उसकी दिखावटी शक्ल पर अटक जाना फिजूल है। वह आदमी बड़ा ही मूर्ख है, जो इनकी असलियत तक नहीं पहुंचता।

इसी तरह के एक और पत्र में वह लिखते हैं--जो लोग इस वास्ते बंदगी करते हैं कि मजलिस में वे सदर की जगह बैठें, लोग उनके चेले हो जायं, दुनिया उनकी ताबेदारी करे, ऐसी उपासना खुदगरजी की उपासना है।

: ६ :

ख्वाजासाहब की लिखी हुई पुस्तकों में और ख्वाजा कुत्ब को लिखे गए पत्रों में अध्यात्म के अनमोल उपदेश हैं। उनकी कुछ बानियां यहां दी जाती हैं:

जिसने झूठी कसम खाई, उसने मानो अपने घर को वीरान कर दिया।

वह सबसे कमजोर है जो अपनी बात पर कायम न रहे।

नेकों की सोहबत नेक काम से बेहतर है। बदों

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

की सोहबत बद काम से बदतर है।

दरवेशी उसका नाम है, जो आवे उसे खाली हाथ न जाने दे। अगर कोई भूखा आवे तो उसे खाना खिलावे। अगर नंगा आवे तो उसे नफीस कपड़े पहनाए। बहरहाल किसीको खाली न जाने दे। हाल पूछकर सबकी दिलजोई करनी चाहिए।

खुद-परस्ती[1] और नफ्स-परस्ती[2] बुत-परस्ती[3] है! जबतक खुद-परस्ती न छोड़ेगा, खुदा-परस्ती[4] हासिल न होगी।

लोगों में सबसे अक्लमंद वे फकीर हैं जिन्होंने दरवेशी और नामुरादी[5] हासिल करली है, क्योंकि इस कूचे में मुराद[6] नामुरादी है और नामुरादी मुराद है। बरखिलाफ इसके अहले गफलत[7] ने सेहत[8] को जहमत[9] और जहमत को सेहत खयाल कर रक्खा है। बस, दाना[10] वही है, जो दुनियावी मुराद तर्क[11] करके फिक्रो-[12] नामुरादी इख्तियार करता है और अपनी मुराद को छोड़कर नामुरादी से मुआफिकत[13] करता है।

---

१. स्वार्थ २. इंद्रिय-लोलुपता ३. मूर्ति-पूजा ४. ईश्वर की उपासना ५. कामनाओं का त्याग ६. कामना। ७. भूल में पड़े हुए लोग ८. भूलों का सुधार करना ९. मुसीबत १०. बुद्धिमान ११. त्याग १२. विचार १३. अनुकूलता।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

: ७ :

अजमेर में ख्वाजासाहब की दरगाह बहुत लंबी-चौड़ी इमारत है। इसमें अलग-अलग समय पर बनी हुई कई मस्जिदें और कई मकान हैं। ये सब ख्वाजा-साहब के रौजे के चारों तरफ बने हुए हैं।

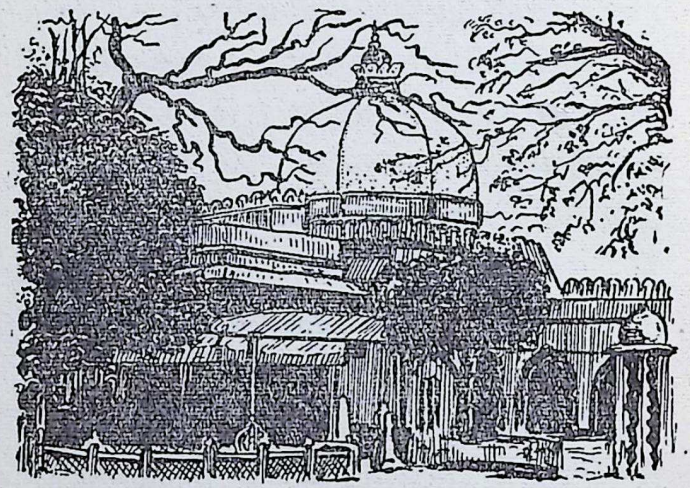

ख्वाजासाहब का रौजा

शुरू में ख्वाजासाहब का एक सादा मजार था। इसके ऊपर रौजा और संगमरमर की गुंबद ख्वाजा हुसैन नागोरी के बनवाये हुए हैं। मजार के चारों तरफ चांदी के पत्तर का बड़ा सुंदर जालीदार कटहरा लगा है। रौजे के दरवाजों पर भी चांदी का पत्तर चढ़ा हुआ

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

वराह का विहंगम दृश्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

है। गुंबद के ऊपर सुनहरी कंगूरा है। रौजे के पश्चिम की ओर जन्नती दरवाजा है। यह केवल उर्स के दिनों में खुलता है। रौजे के सामने का दालान बेगमी दालान कहलाता है। इसके पास ही संदल खाना है। इसमें ख्वाजा-साहब के मजार पर चढ़ाने के लिए चंदन घिसा जाता है।

दरगाह का बुलंद दरवाजा सुल्तान महमूद खिलजी ने बनवाया था। इसके सामने शाहजहां का बनाया हुआ दरवाजा है। इसके ऊपर नौबतखाना है।

दरगाह में दो मस्जिदें हैं। अकबर की बनवाई हुई अकबरी मस्जिद और शाहजहां की बनवाई हुई शाहजहानी मस्जिद। शाहजहानी मस्जिद संगमरमर की है।

निजाम हैदराबाद का बनवाया हुआ उस्मानी दरवाजा सबसे आगे है। इनका बनवाया हुआ एक महफिलखाना भी है। उर्स के समय इसमें कव्वालियां होती हैं।

दरगाह की दो विशाल देगें देखने लायक हैं। ये लोहे की बनी हुई हैं और भट्टियों पर जमी हुई हैं। बड़ी देग अकबर ने चढ़ाई थी। इसमें सौ मन चावल पकता है। छोटी देग जहांगीर ने चढ़ाई थी। इसमें साठ मन चावल पकता है। उर्स के समय भक्त लोग देगें पकवाते हैं। देग का सारा खर्च पकवानेवाला देता है। शाम को देग में चावल, घी, शक्कर और मेवा

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

भरकर भट्टी सुलगा देते हैं। सुबह तक खाना पककर तैयार हो जाता है। यह खाना हिस्सेदारों को बांट दिया जाता है। वे लोग इसे ख्वाजासाहब के प्रसाद के रूप में यात्रियों को बेचते हैं। कुछ समय पहले देग के हिस्सेदार खाना लूटा करते थे। यह दृश्य बड़ा अनोखा होता था। लूटनेवाले सारे शरीर पर मोटे-मोटे गूदड़े लपेटकर और बालटियां लेकर देग के चारों ओर

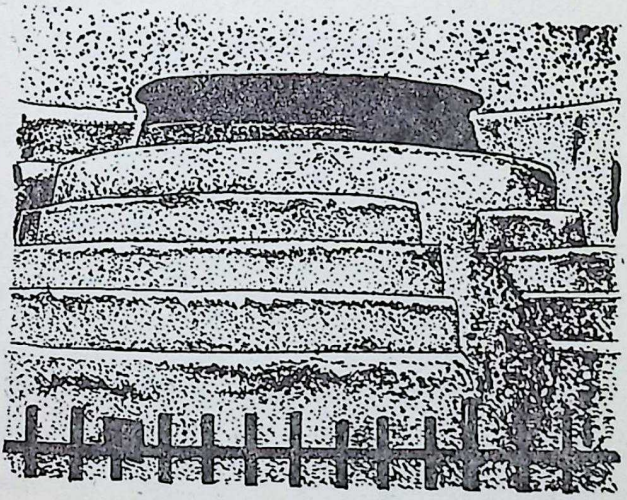

देग, जिसमें एक सौ मन चावल पकते हैं।

जमा हो जाते थे। झांझ बजने पर लूट शुरू हो जाती थी। उबलता हुआ खाना बालटियों से निकाल-निकाल-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

कर बड़े-बड़े डोलों में भरते जाते थे। जब हाथ नहीं पहुंचता था तो देग में कूद पड़ते थे। देग की गर्म भाप से कई बेहोश भी हो जाते थे। अब यह लूटने की रस्म बंद कर दी गई है।

दरगाह के एक कोने में लंगरखाना है। यहां लोहे के बड़े-बड़े कड़ाहों में रोज लंगर पकता है। यह गरीबों और फकीरों को मुफ्त बांटा जाता है।

दरगाह में अरकाट के नवाब का बनवाया हुआ एक दालान है। संगमरमर की एक बारहदरी है, जो 'सोलह खंभा' कहलाती है।

दक्षिण की ओर दरगाह और पहाड़ी के बीच एक बहुत बड़ी बावड़ी है। इसे झालरा कहते हैं। इसका पानी कभी नहीं सूखता। इसमें एक सोता है। इसकी पक्की चहारदीवारी शाहजहां ने बनवाई थी।

: ८ :

दरगाह में और ख्वाजासाहब के मज़ार पर कई रस्में होती हैं। ये रस्में हिंदुओं के मंदिरों में होनेवाले भोग, आरती आदि से बहुत मिलती-जुलती हैं। कुछ कट्टर मुसलमान इन्हें बुत-परस्ती कहकर पसंद नहीं करते।

सुबह (फ़ज़्र) क नमाज से डेढ़-दो घंटे पहले

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

भक्त लोग बेगमी दालान के सामने जमा होते हैं। रौजे का दरवाजा खुलने पर खादिम लोग मजार पर बासे फूलों को हटाकर ताजा फूल रखते हैं। लोबान सुलगाया जाता है। इसके बाद दर्शनार्थी रौजे के भीतर आ सकते हैं। फ़जर की नमाज पूरी होने पर नौबत बजती है।

तीसरे पहर जुह्र की नमाज के बाद खादिम लोग मजार की ख़िदमत करते हैं। दरवाजे पर नौबत बजती है।

शाम को मग़रिब की नमाज से पहले रोशनी का डंका बजता है। खादिम लोग मोमबत्तियां सिर पर रखकर रौजे के भीतर ले जाते हैं। उस समय यह शेर पढ़ा जाता है :

इलाही ताबूद खुरशेदो माही
चिरागे चिश्तिया रा रोशनाई[1]

रात को इशा की नमाज के बाद बेगमी दालान के सामने सहन में कव्वालियां होती हैं। दरगाह में कव्वालों की शाही चौकी है, जिन्हें गुजारा मिलता है। आधा घंटा कव्वालियां होने के बाद रौजे का पिछला दरवाजा बंद हो जाता है। इस समय खादिम लोग

१. हे खुदा, जबतक सूरज और चांद रहें, तबतक चिश्ती का चिराग रौशन रहे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

रौजे में झाड़ू लगाते हैं। फिर तीन मोरछल लेकर बाहर निकलते हैं। लोग इन मोरछलों को अपने सिर पर रखवाते हैं। इसी समय अगरदानी बाहर निकलती है। लोग इसे भी सिर पर रखवाते हैं और लोबान का धुआं आरती की तरह लेकर शरीर पर मलते हैं। इसके बाद दरवाजा बंद कर देते हैं। यह सब हर रोज होता है।

जुमेरात (गुरुवार) को इशा की नमाज के बाद कव्वालियों की महफिल होती है। बेगमी दालान के बाहरवाले सहन में फर्श बिछाया जाता है। पहले फातिहा पढ़ा जाता है, फिर प्रसाद बंटता है। इसके बाद एक घंटे तक महफिल रहती है। इसमें दरगाह के दीवान और मुतवल्ली भी शामिल होते हैं।

इसी तरह की महफिलें हरेक इस्लामी महीने की छठी तारीख को होती हैं। यह दिन ख्वाजासाहब के स्वर्गवास की याद में मनाया जाता है।

: ९ :

उर्स के समय दरगाह में बड़ी धूमधाम रहती है। फकीर और दरवेश रजब से पहले के महीने जमादि-उस्सानी के अंत में ही अजमेर आने लगते हैं। ये सब दरगाह में डेरा डालते हैं। २५ तारीख को बुलंद दरवाजे पर झंडा लगाने की रस्म बड़ी धूमधाम से होती है।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

रजब का चांद होने पर दरगाह में शादियाने बजते हैं और तोप की सात सलामियां होती हैं। खादिमों की गद्दियां बिछ जाती हैं। ये लोग अपने-अपने यजमानों के ठहरने और खाने-पीने का इंतजाम करते हैं। ग़रीब लोग दरगाह में पड़ रहते है जन्नती दरवाजा खोल दिया जाता है। महफिलखाने में कव्वालियों की महफिलें शुरू होती हैं। रोज रात को ग्यारह बजे से महफिल शुरू होती है। दरगाह के दीवान और मुतवल्ली दस्तारें बांधकर, चोगे पहनकर और गेरुआ चादरें ओढ़कर महफिल में बैठते हैं। चारों तरफ फकीर, शेख, दरवेश और कव्वाली सुननेवाले बैठते हैं। महफिल में कोई नंगे सिर नहीं बैठ सकता।

रात के १ बजे दीवान और मुतवल्ली रौजे में जाकर ख्वाजासाहब के मजार को स्नान कराते हैं! सुबह तीन-चार बजे महफिल समाप्त होती है। आखिरी दिन सुबह ६-७ बजे से मजार को स्नान कराना प्रारंभ होता है। स्नान के लिए गुलाब और केवड़े के अर्क का उपयोग किया जाता है। रौजे के बाहर यात्री झाड़ू लगाते हैं। फर्श भी धोया जाता है।

उर्स में सारे भारत के चुने हुए कव्वाल आते हैं। दुकानदार दूर-दूर से आते हैं। दरगाह के सामने दर-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding.

गाह बाजार में चौबीसों घंटे भीड़ रहती है। मजार पर चादरें, पंखे, फूलों की डालियां आदि चढ़ानेवाले गाजे-बाजे के साथ बाजार में होकर निकलते हैं।

दरगाह के दरवाजे पर जूते उतारने पड़ते हैं। छतरी लगाकर, फूलों का हार पहनकर और जलती लालटेन लेकर दरगाह में नहीं जा सकते। दरगाह के भीतर तम्बाकू पीना मना है। रोजे में नंगे सिर कोई नहीं जा सकता। दरगाह में हर मुसलमान को फातिहा, कव्वाली, मिलाद,[1] वाज,[2] मुशाअरा और बुजुर्गों के उर्स का अधिकार है। जागीर और चढ़ावे से होने वाली आमदनी दरगाह के कामों में खर्च होती है। इसमें से विद्यार्थियों को वजीफे और बूढ़ों व अपाहिजों को गुजारे दिये जाते हैं। कहते हैं, दरगाह में परंपरा से होने वाली रस्मों को बदलने का हक किसीको भी नहीं है।

●

१. हजरत मोहम्मद का जन्मोत्सव।
२. धर्मोपदेश।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding by

समाज-विकास-माला की पुस्तकें

१. बद्रीनाथ
२. जंगल की सैर
३. भीष्म पितामह
४. शिवि और दधीचि
५. विनोबा और भूदान
६. कबीर के बोल
७. गांधीजी का विद्यार्थी-जीवन
८. गंगाजी
९. गौतम बुद्ध
१०. निषाद और शबरी
११. गांव सुखी, हम सुखी
१२. कितनी जमीन ?
१३. ऐसे थे सरदार
१४. चैतन्य महाप्रभु
१५. कहावतों की कहानियां
१६. सरल व्यायाम
१७. द्वारका
१८. बापू की बातें
१९. बाहुबली और नेमिनाथ
२०. तंदुरुस्ती हजार नियामत
२१. बीमारी कैसे दूर करें ?
२२. माटी की मूरत जागी
२३. गिरिधर की कुंडलियां
२४. रहीम के दोहे
२५. गीता-प्रवेशिका
२६. तुलसी-मानस-मोती
२७. दादू की वाणी
२८. नजीर की नज्में
२९. संत तुकाराम
३०. हजरत उमर
३१. बाजीप्रभु देशपांडे
३२. तिरुवल्लुवर
३३. कस्तूरबा गांधी
३४. शहद की खेती
३५. कावेरी
३६. तीर्थराज प्रयाग
३७. तेल की कहानी
३८. हम सुखी कैसे रहें ?
३९. गो-सेवा क्यों ?
४०. कैलास-मानसरोवर
४१. अच्छा किया या बुरा ?
४२. नरसी महेता
४३. पंढरपुर
४४. ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती
४५. संत ज्ञानेश्वर
४६. धरती की कहानी
४७. राजा भोज
४८. ईश्वर का मंदिर
४९. गांधीजी का संसार-प्रवेश
५०. ये थे नेताजी
५१. रामेश्वरम्
५२. कव्वों का विलाप
५३. रामकृष्ण परमहंस
५४. समर्थ रामदास
५५. मीरा के पद
५६. मिल-जुलकर काम करो
५७. कालापानी
५८. पावभर आटा

मूल्य प्रत्येक का छः आना ४० न

छः आना
४० न०१९

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand